राजपूत

राजपूत (जिसका अर्थ है राजा-पुत्र या 'राजा का पुत्र') एक योद्धा कबीला, जो उत्तर भारत के शासक हिंदू योद्धा वर्गों के वंशज होने का दावा करता है । उनका शासन पश्चिमी, मध्य, उत्तरी भारत से लेकर पाकिस्तान के कुछ हिस्सों तक फैला हुआ था।

6ठीं से 12वीं शताब्दी ईसवी के दौरान राजपूत प्रमुखता से उभरे । 20वीं शताब्दी ईस्वी तक, राजपूतों ने राजस्थान और सौराष्ट्र की अधिकांश रियासतों पर शासन किया ।

राजपूतों ने युद्ध को अपना मुख्य व्यवसाय बनाया था और संकट के समय अनुकरणीय वीरता दिखाई थी। हालाँकि, वे जनता के हितों को शासक वर्ग के हितों से जोड़ने में विफल रहे। भारत के लिए सबसे गंभीर निहितार्थ यह था कि, जब विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा से आक्रमण करना शुरू किया तो भारतीय समाज आसानी से टूट गया।

हर्ष की मृत्यु (647 ई.) और उत्तरी भारत की मुस्लिम विजय के बीच की अवधि को अक्सर मध्ययुगीन इतिहासकार राजपूत काल के रूप में वर्णित करते हैं, जो एक हद तक, एक मिथ्या नाम है। हालाँकि उनका समाज पर प्रभाव पड़ा लेकिन फिर भी वे भारतीय समाज का केवल एक अंश ही थे।

राजपूत राज्य और राजवंश

हिंदूशाही राजवंश

इस राजवंश ने अफगानिस्तान और पंजाब के कुछ हिस्सों पर शासन किया ।जयपाल इसका पहला राजपूत राजा था जो अंतिम ब्राह्मण राजा भीमदेव का उत्तराधिकारी बना। 1001 ई. में, वह गजनी के महमूद से हार गया जिसके बाद उसने आत्मदाह कर लिया।

उनके उत्तराधिकारी आनंद पाल ने भी महमूद के खिलाफ लड़ाई लड़ी लेकिन 1008 में वैहिंद की लड़ाई में वह भी हार गए।इसके अंतिम राजा भीमपाल की मृत्यु 1024 में हुई। उन्होंने 964 ई. से 1026 ई. तक शासन किया।

चौहान वंश

चौहानों ने 956 और 1192 ईस्वी के बीच वर्तमान राजस्थान के पूर्वी हिस्सों पर शासन किया, जिनकी राजधानी अजमेर थी और बाद में उन्होंने अपने क्षेत्र को आधुनिक पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के कुछ हिस्सों तक बढ़ा दिया। इस राजपूत राजवंश की स्थापना सिंहराज ने की थी, जो अजमेर शहर के संस्थापक के रूप में प्रसिद्ध है ।

पृथ्वीराज चौहान को सभी चौहान शासकों में सबसे महान माना जाता था। उनके शासनकाल के दौरान, राज्य दिल्ली, अजमेर, आधुनिक रोहिलखंड, कालिंजर, हांसी, कालपी और महोबा तक फैला हुआ था। उन्होंने पंजाब के गजनवी शासक से भटिंडा (पंजाब में) जीत लिया और तराइन की पहली लड़ाई (1191) में गोरी के मुहम्मद को हराया। हालाँकि, तराइन की दूसरी लड़ाई, 1192 में वह हार गया ।

सोलंकी वंश (गुजरात का चालुक्य वंश)

सोलंकियों ने 945 और 1297 ई. के बीच वर्तमान भारतीय राज्य गुजरात पर अपना शासन स्थापित किया । मूलराज के शासनकाल के दौरान उनका राज्य प्रमुखता से उभरा । उन्होंने अन्हिलवाड़ा में स्थित अपनी राजधानी के साथ शासन किया ।

परमार राजवंश

इस वंश का संस्थापक उपेन्द्र (कृष्णराज) था। भोज इस वंश का सबसे प्रमुख शासक था। उन्होंने भोजपुर शहर का निर्माण किया और भोज शाला की

स्थापना की जो संस्कृत अध्ययन का केंद्र था । परमार शासन के तहत मालवा को बड़े स्तर की राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

परमारों ने संस्कृत कवियों और विद्वानों को संरक्षण दिया । महान शासक भोज स्वयं एक प्रसिद्ध विद्वान थे। अधिकांश परमार राजा शैव थे और उन्होंने कई शिव मंदिरों की स्थापना की, हालाँकि उन्होंने जैन विद्वानों को भी संरक्षण दिया।

चंदेल राजवंश

इस राजपूत राजवंश की स्थापना जयाशक्ति ने की थी । उन्होंने महोबा को अपनी राजधानी बनाकर पूरे बुन्देलखण्ड के क्षेत्रों पर शासन किया ।

चंदेल अपनी कला और वास्तुकला के लिए जाने जाते हैं, विशेष रूप से उनकी सांस्कृतिक राजधानी खजुराहो के मंदिरों के लिए ।अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बुन्देलखण्ड पर विजय प्राप्त करने के बाद यह राजवंश समाप्त हो गया।

गहड़वाला राजवंश

इस राजपूत राजवंश ने 11वीं शताब्दी के अंत से शुरू होकर लगभग सौ वर्षों तक कन्नौज राज्य पर शासन किया ।

जयचंद्र , राजवंश के अंतिम शक्तिशाली राजा थे जिन्होंने कुतुब अल-दीन ऐबक के नेतृत्व में घुरिद आक्रमण का सामना किया था। 1194 ई. में चंदावर के युद्ध में वह पराजित हुआ और मारा गया ।